उरद की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 8527 हे. क्षेत्र में उरद की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 400 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

उरद खरीफ मौसम की एक प्रमुख दलहन फसल है।

भूमि का चुनाव : इसकी खेती अनेकों प्रकार की मिट्टी में समुचित प्रबंधन द्वारा की जा सकती है। परन्तु ढाल वाली दोमट एवं बलुई मृदा, जिसका जल निकास उत्तम हो, काफी उपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी : खेत को ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर या देशी हल से 2-3 बार इस प्रकार जुताई करनी चाहिए कि खेत का कोई भी भाग बिना जुताई के न रह जाये। अंतिम जुताई के समय 50 क्विं./हे. सड़े हुए गोबर की खाद का छिड़काव कर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए।

बीजोपचार :

1) बीज तथा मृदा जनित रोगों से फसल की सुरक्षा के लिए बोआई से पूर्व कार्वेन्डाजीम या बेवस्टीन नामक कवकनाशी 2 ग्राम/किलो बीज की दर से मिलाते हैं। उसके आधा घंटा बाद इमिडाक्लोरपीड को 2 मि.ली./ली. पानी या डाइमिथियोट 5 मि.ली. को 50 मि.ली. पानी में घोलकर प्रति किलोग्राम बीज की दर से भलीभाँति मिलाकर छाया में सुखा लेते हैं, जिससे मृदा में उपस्थित हानिकारक कीटों से फसल की सुरक्षा होती है।
2) फसल को दीमक से बचाने के लिए क्लोरपाइरीफॉस नामक कीटनाशी 6 मि.ली., 50 मि.ली. पानी में घोलकर प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर उपचारित करते हैं। इसके बाद छाया में सुखा लेते हैं।
3) सूक्ष्म परजीवी से पौधों की सुरक्षा हेतु बीजों को फफूंदनाशी या कीटनाशी से उपचार करके सूक्ष्म परजीवीनाशी जैसे - ट्राइकोडरमा बिरीडी का 1% घोल बनाकर बीजों को उपचारित करते हैं।

बीजों का राइजोबियम से उपचार : उरद फसल की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए राइजोबियम कल्चर तथा फोस्फो फास्फेट सोलेवलाइजिंग बैक्टिरिया (P.S.B.) से उपचारित करते हैं।

उन्नत किस्में : सुलता (डब्लू.बी.यू.109), पी.यू.-31, आजाद उरद 1 (के.यू.-92-1) बसन्त बहार (पी.डी.यू. 1), यू.जी. 606, NUL-7, MASH-114, Uttara, KU-91, IPU 02-42. PM-4, Sulata WBU-109, Prabhat ICPL 8863, Pant Arhar 291, उत्तरा (आई.पी.यू.94-1), आजाद उर्द-1 (के.यू.92-1), बिरसा उर्द-1, बसन्त बहार (पी.डी.यू.-1), पन्त यू.-19, पन्त यू.-30, पन्त यू.-40 तथा बीज दर : 20 कि.ग्रा./हे.।

बोआई का समय : जून के प्रथम सप्ताह से जुलाई के मध्य तक।

पोषक तत्व : खेत में 50 क्विं. गोबर की सड़ी हुई खाद तथा उर्वरक 25:50:25:20 :: एन.:पी.:के.:एस. प्रति हे. की दर से दें। दलहनी फसलों में नेत्रजन, स्फूर, पोटाश तथा गंधक का प्रयोग बोआई के समय ही करते हैं। इसके लिए यूरिया 10 कि., डी.ए.पी.-110 कि. पोटाश 40 कि. तथा फास्फोजिप्सम 85 कि. प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करते हैं।

बोआई का तरीका : प्रायः किसान उरद की बोआई छिटकवा विधि से करते हैं। परन्तु अधिक उपज प्राप्त करने के लिए कतार में बोआई उत्तम होती है। पंक्ति से पंक्ति 30 सें.मी. तथा पौधा से पौधा 10 सें.मी. की दूरी पर बोआई करनी चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन : फसल को खर-पतवार से हानि न हो इसके लिए दो बार निकाई-गुड़ाई करते हैं। प्रथम बोआई के 25 दिनों बाद तथा दूसरी बोआई के 40 दिनों बाद करते हैं। खर-पतवार का प्रबंधन पेन्डीमिथलीन नाम रासायनिक दवा को 3 लीटर/हे. की दर से 600 लीटर पानी में घोलकर बोआई के तुरंत बाद छिड़काव कर करते हैं।

उपज : औसतन 15-18 क्विं./हे.

उड़द फसल के पौध संरक्षण

कीट एवं रोग का प्रबंधन :

1) **भूआ पिल्लू :** यह कीट पत्तियों को काफी नुकसान पहुँचाता है। प्रारंभिक अवस्था में कीट ग्रसित पत्तियों को इकट्ठा कर नष्ट कर देते हैं। जब कीट के शरीर में रोयें न बने हों, तो डाईक्लारीफास नामक दवा 1 मि.ली./2 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है। बड़े एवं रोयेंदार होने पर मोनोक्रोटोफॉस 2 मि.ली./लीटर को पानी में घोलकर छिड़काव करते हैं।

2) **रस चूसक कीट :** सफेद मक्खी, थ्रीप्स तथा माहू कीट पौधों के कोमल पत्तों, टहनियों तथा फूलों के रस-चूस लेते हैं जिससे पौधा कमजोर होकर सुखने लगता है। ये कीट विषाणु रोग, जैसे पीला मोजैक को फैलाने में भी सहायक होते हैं।

   थ्रीप्स से बचाव के लिए 50% ट्राइजोफास दवा को 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर फसल में फूल आने के समय छिड़काव करते हैं।

   सफेद मक्खी से बचाव के लिए रोगग्रसित पीले पौधे को खेत से उखाड़कर नष्ट कर देते हैं।

3) **फली छेदक कीट :** इस कीट से उरद की फसल की सबसे अधिक क्षति होती है। फली छेदक फली के अन्दर छेदकर घुस जाता है और दाने को खाकर नुकसान करता है। इसके नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस की 1 मि.ली. मात्रा का प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करते हैं। नीम कर्नल एक्सट्रैक्ट 5% का छिड़काव भी लाभकारी होता है।

4) **पीला मोजैक रोग :** यह एक विषाणु जनित रोग है जिसमें पौधों की मुलायम पत्तियों पर पीले-हरे रंग के चितकबरे धब्बे बनते हैं। रोग ग्रसित पत्तियाँ अंत में पूरी पीली हो जाती हैं। रोगग्रसित पौधों को खड़ी फसल से निकालकर नष्ट कर देते हैं।

5) **पत्ती का चित्ती रोग :** इस रोग से आक्रांत पौधे की पत्तियों पर छोटे-छोटे गोल तथा कत्थई रंग के धब्बे बनते हैं। धब्बे के बीच का भाग भूरा या धूसर रंग का हो जाता है। बाद में धब्बे आपस में मिलकर अनियमित आकार के बड़े-बड़े धब्बे बन जाते हैं और पत्तियाँ झुलस कर गिर पड़ती हैं। इस प्रकार के धब्बे शाखाओं तथा फलियों पर भी दिखाई पड़ते हैं। आक्रांत पौधों पर इन्डोफिल 45 या डाइथेन एम 45 नामक दवा की 2.5 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करते हैं। रोग ग्रसित पौधों में आवश्यकतानुसार 10-12 दिनों के अंतराल पर दूसरा छिड़काव भी किया जा सकता है।

6) **पत्ती का व्यांकुचन रोग :** यह भी एक विषाणुजनित रोग है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक होती है।

   रोग ग्रस्त पौधों की पत्तियाँ अनियमित आकार में बढ़ती हैं तथा सिकुड़ कर झुर्रीदार हो जाती हैं। फलतः रोगी पौधों की बढ़वार रूक जाती है।

   क) अक्रांत पौधों को जड़ से उखाड़कर जला देना चाहिए।

   ख) आक्सीमिथाइल डेमाटोन या इमीडाक्लोराप्रीड नामक दवा का 0.1% छिड़काव करना चाहिए।

×××××